अर्ध शतक अनुभव

सुमित

© Sumit Kapoor 2022

All rights reserved

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author.

Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the author and publisher assume no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

First Published in March 2022

ISBN: 978-93-5611-192-9

BLUEROSE PUBLISHERS
www.bluerosepublishers.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898

Cover Design:
Aveek

Typographic Design:
Rohit

Distributed by: BlueRose, Amazon, Flipkart

अनुक्रमणिका

जीवन दर्शन

01. आस्तित्वहीन
02. कलम
03. तीसरा पहर
04. ख्वाहिशों का खानसामा
05. उतिष्ठ
06. जहाज़ी
07. ज्वालामुखी
08. अम्ल
09. जाने क्यूं?
10. उलझनों में
11. मशाल
12. डर
13. दीवारों में कायनात
14. धुंध
15. परवाज़
16. पुनः एक बार
17. वो लौट रहा था

18. गुफ्तगू
19. विजय सिंधु
20. अनुसंधान
21. वो अंत होती सी नदी

प्रेम

22. प्रेमपाश
23. फिर मिली वो
24. मिथ्या
25. ख्वाहिशों का आबशार
26. उस वक्त
27. ढलती शाम
28. नूर
29. मैं जानता हूं
30. फिर तुम आई
31. राज़दान
32. मैंने सब कुछ तुममें देखा

वियुक्ति

33. शम की मिट्टी
34. उधेड़बुन
35. एक शाम मांगी थी
36. अधूरी
37. अब आंसू नहीं आते
38. नुमाइश

39. समंदर
40. बंधन
41. सुनो
42. सिलसिला
43. ख्याल भर ही तो है

सृष्टि वंदन

44. भोर
45. निशा
46. रक्षक

राष्ट्रवाद

47. शक्तिपुंज
48. सैनिक हम
49. वहम
50. शक्तिमान

1. आस्तित्वहीन

माना शब्दों के अवलंब बिना,
है कठिन जग में जीना,
हृदय भाव अभिव्यक्ति को,
शब्द अधरों पर आते हैं,
पर कुछ क्षण होते हैं बंधु,
हम कहने में सकुचाते हैं, शब्द आस्तित्वहीन हो जाते हैं…

करो स्मरण उस क्षण को तुम जब,
पड़े हुए निज शय्या: पर,
शरीर रहा यूं व्याधि से तप,
छाया था तम आंखों पर,
क्या माता तब कुछ बोली थी,
चिंता की रेखाएं बस दृढ़ मस्तक पर,
निज हाथ धरा यूं तुम्हारे शीश ऊपर,
तब शब्द कहा कुछ कह पाए,
शब्द कहीं खो जाते है, अस्तित्वहीन हो जाते हैं…

करो कल्पना उस पल की तुम अब,
हो रहा मिलाप बिछड़ों का जब,
घटनाओं का था क्रम कुछ ऐसा,

पुनः मिलन था असंभव जैसा,
वियोगी हृदय की वेदना,
क्या शब्दों में कभी व्यक्त हुई है,
यथार्थ मिलन में हे बंधु,
भाषा कब प्रयुक्त हुई है,
अश्रु की वह प्रसन्न धार,
कह गई सब भाव निस्वर,
शब्द नहीं कुछ कह पाते हैं, आस्तित्वहीन हो जाते हैं।

2. कलम

मैं कवि नही हुआ अभी,
लफ्जों के बस ताने बुनता हूं,
बयान कर देता हूं अपने दिल की,
मैं एहसासों के मोती चुनता हूं,

मैं कवि नही हुआ अभी,
सवाल लिए जवाब खोजता हूं,
कोई जहद मानो हो बाकी,
मैं शोर लिए संगीत खोजता हूं,

मैं कवि नही हुआ अभी,
बस कुछ जीवन दर्शन परखा है,
हैं कुछ ख्वाहिशें दबा रखी,
कुछ के अब मिलने का चर्चा है,

मैं कवि नही हुआ अभी,
लिखने में अभी इक उम्र गुजरेगी,
बहुत रंग घुलेंगे कलम में इसकी,
शायद कभी तब कविता निखरेगी ।

3. तीसरा पहर

रात्रि के इस तीसरे पहर में,
जब निद्रा के पखेरू यूं उड़ चलें हो,
जैसे बैरागी बसेरों को कह अलविदा,
एक नई ठोर की ओर चल पड़े हों,

मैं एक बार फिर सोते सोते जाग गया हूं,
या शायद कभी सोया भी हूं, नहीं जानता,
कुछ पीड़ा की क्रीड़ा बढ़ने सी लगी है यूं,
करवटों ने खदेड़ दिया दूर उन झपकियों को,

हाल कुछ व्यथित है, जीवन प्रसंग मानो भिखर रहा,
मैं खुद को ढूंढने जब चला, कहीं भी नहीं मिला,
आज समेट कर अपनी उबासियों को सभी,
एक और यतन कर लेता हूं फिर अभी,

कुछ तंद्रा अभी छा रही है, अनमना सा हो रहा हूं,
झपकियों की आगोश को और कस के पकड़ लूं,
शायद आज रात के इस तीसरे पहर में कहीं,
कोई स्वप्न फिर गहरा जाए, और शायद…
मुझे नींद आ जाए ।

4. ख्वाहिशों का खानसामा

कुछ इरादों के मर्तबान जमा कर रख दिए बगल में,
और साथ में मसाले, जो लाए थे ख्वाबों की हट्टी से,
इलायची, लोंग, नमक, हल्दी, दालचीनी और जीरा,
और भी था कुछ स्वादानुसार तज़ुर्बा ओटे पर धरा,
थोड़ी सी तीखी मिर्च, थोड़ा सूखा धनिया, थोड़ी राई भी,
मेहगें थे थोड़े, पर लगा ज़रूरी थे, तो ज्यादा सोचा नहीं,
महक और स्वाद कहीं अधूरा ना रह जाए ज़रा भी,
हां, वो अदरक लहसुन जैसी टीस भी तो ज़रूरी थी,
बारीक प्याज के टुकड़ों सरीखी ज़िन्दगी को भून कर,
थोड़े रिश्तों की पुयुरे मिलाते हुए चलाया देर तक,
अब ख्वाहिशों के बड़े बड़े हिस्से डालकर पकाया,
थोड़ा गल जाए, इसलिए एक सब्र का ढक्कन भी लगाया,
बड़ी देर रोका खुद को, इंतज़ार ज़रूरी है सोच कर,
आखिर आंच से उतारा और जांचा ढक्कन हटा कर,
कहीं से थोड़ी कच्ची, कहीं थोड़ी सी जली तो थी,
मगर ख्वाहिशों की ये सब्ज़ी इतनी बुरी भी नहीं थी ।

You've Just Finished your Free Sample

Enjoyed the preview?

Buy: http://www.ebooks2go.com